B.M.M. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-I Paper-I (Economics)

Dr S.K. Singh.
Deptt of Economics

उपयोगिता का अभिप्राय

Meaning of Utility

उपयोगिता का अर्थ है आवश्यकता सन्तुष्टि शक्ति (Want Satisfying power) दूसरे शब्दों में वस्तु विशेष में किसी उपभोक्ता की आवश्यकता विशेष की सन्तुष्टि की निहित क्षमता अथवा शक्ति (capacity or power) का नाम नाम ही उपयोगिता है। प्रत्येक वस्तु में कोई-न-कोई ऐसी विशेषता अवश्य निहित रहती है जिसके कारण उपभोक्ता उसकी मांग करता है। लाभदायक (Helpful) एवं हानिकारक (Harmful) दोनो है, इस प्रकार की वस्तुओं में उपयोगिता हो सकती है। एक वस्तु की उपयोगिता सभी व्यक्तियों के लिए समान नहीं होती। उपयोगिता शब्द सापेक्षिक (relative) है। मादक पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हुए भी मादक पदार्थ भोगी व्यक्ति के लिए उपयोगिता रखते हैं। वस्तु के उपभोग की इच्छा उपयोगिता को जन्म देती है। प्रो० फ्रेजर के शब्दों में उपयोगिता केवल इच्छा करना है। (Utility is simply desiredness) इस प्रकार अनैतिक कार्य जैसे, चोरी, डकैती, आदि भी किसी व्यक्ति विशेष को उपयोगिता दे सकते हैं। उपयोगिता 'इच्छा कि तीव्रता का फलन होती है (Utility is a function of intensity of want) उपभोक्ता में किसी वस्तु विशेष के प्रति उपभोग की तीव्रता (intensity of consumption) जितनी अधिक होगी, उपभोक्ता को उस वस्तु के उपभोग से उतनी ही अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी। जैसे जैसे उपभोक्ता किसी वस्तु विशेष का उपभोग करता चला जाता है उसके उपभोग की इच्छा की तीव्रता कम होती चली जाती है। उपयोगिता (Utility) एवं सन्तुष्टि (Satisfaction) दोनो मनोवैज्ञानिक विचार हैं, फिर भी दोनो में एक बिन्दु पर भिन्नता है। उपयोगिता का अर्थ जहा हम 'अनुमानित सन्तुष्टि (expected satisfaction) से लेते हैं वही सन्तुष्टि का अभिप्राय वास्तविक रूप से अनुभव की गई सन्तुष्टि (actually realised satisfaction) से लिया जाता है। वास्तविक सन्तुष्टि अनुमानित सन्तुष्टि से कम, अधिक अथवा बराबर हो सकती है। आधुनिक अर्थशास्त्रीय उपयोगिता का अर्थ अनुमानित सन्तुष्टि से लगाते हैं क्योंकि अनुमानित सन्तुष्टि उपभोग कि तीव्रता पर निर्भर करती है

Dr. S.K. Singh.
Deptt of Economics

कृषि का महत्व
(IMPORTANCE OR ROLE OF AGRICULTURE)

भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में, कृषि हमारे देश में केवल जीविकोपार्जन का साधन या उद्योग-धन्धा ही नहीं है, बल्कि अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। देश के उद्योग-धन्धे, विदेशी व्यापार, मुद्रा अर्जन, विभिन्न योजनाओं की सफलता एवं राजनीतिक स्थायित्व भी कृषि पर ही निर्भर है। एक बार स्वर्गीय पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि "कृषि को सर्वाधिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। यदि कृषि असफल रहती है तो सरकार एवं राष्ट्र दोनों ही असफल रहते हैं।" कृषि के महत्व को निम्नांकित तथ्यों से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है:

(1) कृषि में सर्वाधिक रोजगार - भारत कृषि 54.6 प्रतिशत जनसंख्या को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार देती है। इसके अतिरिक्त कृषि व्यवसाय में करोड़ों लोग लगे हुए हैं, जो कृषि सम्बन्धी क्रियाओं में योगदान देते हैं।

(2) राष्ट्रीय आय का महत्वपूर्ण स्रोत - कृषि का राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश की सकल राष्ट्रीय आय में कृषि एवं उससे सम्बन्धित क्षेत्र का हिस्सा 14 प्रतिशत है।

(3) उद्योगों का आधार - अधिकांश महत्वपूर्ण भारतीय उद्योगों को कच्चा माल खेती से ही प्राप्त होता है, जैसे सूती वस्त्र, चीनी, जूट, कॉफी, रबड़ वनस्पति घी, तेल सभी उद्योग कच्चे माल के लिए खेती पर निर्भर हैं। लघु उद्योगों में चावल, आटा, तेल, व दालें, आदि की मिलों को भी कच्चा माल कृषि से ही मिलता है।

(4) विदेशी व्यापार में महत्व - भारतीय कृषि का विदेशी व्यापार में भी महत्वपूर्ण स्थान है। चाय के कुल निर्यात का लगभग 11 प्रतिशत निर्यात कृषि पदार्थ तथा कृषि से सम्बन्धित कच्चे पदार्थों पर आधारित उद्योगों द्वारा किया जाता है।

(5) रसायनों की पूर्ति - वर्तमान रसायनों की आवश्यकताओं की लगभग शत प्रतिशत पूर्ति भारतीय कृषि द्वारा ही की जाती है।

(6) पशुओं का चारा - देश में 48 करोड़ पशु हैं इनका चारा कृषि से ही प्राप्त होता है।